SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों का एक संक्षिप्त अध्ययन

उमेश कुमार राय, राजनीति विज्ञान विभाग,
उदय प्रताप कालेज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors :
उमेश कुमार राय, राजनीति विज्ञान विभाग,
उदय प्रताप कालेज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 28/09/2020
Plagiarism : 02% on 24/09/2020

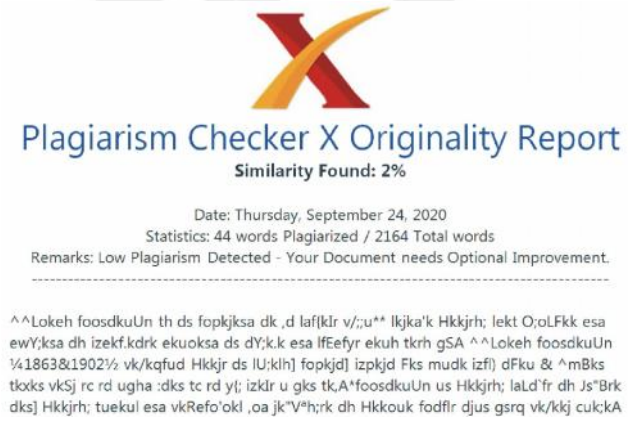
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Thursday, September 24, 2020
Statistics: 44 words Plagiarized / 2164 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^Lokeh foosdkuUn th ds fopkjksa dk ,d laf[kIr v/;;u** Ikjka'k Hkkjrh; lekt O;oLFkk esa ewY;ksa dh izekf.kdrk ekuoksa ds dY;k.k esa lfEefyr ekuh tkrh gSA ^^Lokeh foosdkuUn ¼1863&1902½ vk/kqfud Hkkjr ds lU;klh] fopkjd] izpkjd Fks mudk izfl) dFku & ^mBks tkxks vkSj rc rd ugha :dks tc rd y(; izkIr u gks tk,A*foosdkuUn us Hkkjrh; laLd`fr dh Js"Brk dks] Hkkjrh; tuekul esa vkRefo'okl ,oa jk"V*h;rk dh Hkkouk fodflr djus gsrq vk/kkj cuk;kA

शोध सार

भारतीय समाज व्यवस्था में मूल्यों की प्रमाणिकता मानवों के कल्याण में सम्मिलित मानी जाती है। ''स्वामी विवेकानन्द (1863–1902) आधुनिक भारत के सन्यासी, विचारक, प्रचारक थे उनका प्रसिद्ध कथन – 'उठो जागो और तब तक नहीं रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। 'विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को, भारतीय जनमानस में आत्मविश्वास एवं राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने हेतु आधार बनाया। स्वामी विवेकानन्द के अनुभव भी व्यवहारिक हैं वे सत्य के पुजारी हैं, किसी भी स्थिति में सत्य से विमुख नहीं होते थे। केवल सत्य ही चिरस्थायी बाकी सब नश्वर है। स्वामी जी ने 'कर्मयोग' की शिक्षा दी है तथा कहा कि मातृभूमि की निःस्वार्थ सेवा ही सच्चा कर्मयोग है। स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से समाज के नव विकास के लिए गति देने का कार्य किया है। इस तरह उन्होंने सच्चे मानववाद तथा विश्वबन्धुत्व के आदर्शो का बढ़ावा दिया। वर्तमान भारतीय समाज में युवाओं के आदर्श के रूप में स्वामी विवेकानन्द का नाम आता है उनके विचार वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के अनुरूप थे।

मुख्य शब्द

वेदान्त, मानवतावाद, राष्ट्रवाद, कर्मयोग, आध्यात्मवाद, सामाजिक पुनर्निमाण।

भारतीय समाज व्यवस्था में मूल्यों की प्रमाणिकता मानवों के कल्याण में सम्मिलित मानी जाती है। आधुनिक भारतीय व्यवस्था में सामाजिक एवं राजनीतिक आयाम में भी मानवतावादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है, इस क्रम में अनेक ऋषि मनीषियों के विचार प्रासंगिक है जिनमें स्वामी विवेकानन्द सर्वप्रमुख है। वर्तमान पीढ़ी तथा आगे आने वाली कई पीढियाँ इनके दर्शन, चिन्तन, विचार तथा राष्ट्रवादी विचारों की ऋणी रहेगी।

''स्वामी विवेकानन्द (1863–1902) आधुनिक भारत के सन्यासी, विचारक, प्रचारक थे जिन्होंने राजनीति में प्रवेश नहीं किया परन्तु भारतीयों के लिए स्वतन्त्रता (जाग्रत राष्ट्रवाद) का मार्ग''[1] दिखाया। स्वामी विवेकानन्द के दर्शन मुख्यतः तीन प्रधान स्त्रोत थे :

1. वेदों तथा वेदान्त की गौरवशाली परम्परा।
2. रामकृष्ण परमहंस के साथ सम्पर्क।
3. व्यक्तिगत जीवन के आनुभविक पहलू।

ये तीनों ही स्त्रोतों के आधार पर उनका विचार स्तम्भ सृजित होता है। आधुनिक वेदान्त व राजयोग उनका प्रमुख दर्शन है, तथा उनका प्रसिद्ध कथन – 'उठो जागो और तब तक नहीं रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।' इस उक्ति का प्रमाण सन् 1893 में अमेरिका प्रवास में धर्म संसद में दिया गया ओजस्वी भाषण था। उनका सरोकार परम सत्य और परम् ब्रह्म से था। जो शाश्वत एवं निर्विकार, चेतन एवं आनन्दमय है।

स्वामी विवेकानन्द ने तर्क दिया ''यदि तुम ईश्वर की सेवा करना चाहते हो तो मनुष्य की सेवा करो–उस मनुष्य की जिसे तुम्हारी सेवा और सहायता की प्रबल आवश्यकता है। दीन–दुःखी, असहाय और पीड़ित मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।''[2]

विवेकानन्द अद्वैत दर्शन को स्वीकारते थे जिसके अनुसार एक ही ब्रह्म् या ईश्वर समूचे विश्व में विद्यमान है और विश्व में प्रदर्शित होने वाले भौतिक तत्व इसी ब्रह्म के परिणाम है। विवेकानन्द के सामाजिक विचार इसी वेदान्तिक परम्परा पर निर्मित है। जिसमें मानवीय एकता का आध्यात्मिक स्वरूप निहित है। वेदान्त व भक्ति का मूल ज्ञान है–मनुष्य इसी जीवन में सत्यज्ञान (वेदान्त) तथा सत्यप्रेम (भक्ति) द्वारा आत्मा एवं परमात्मा की तन्मयता का अनुभव करता है। सभी धर्मो का यही उद्देश्य है और इसलिए उनमें बाहरी विभिन्नता होने पर भी एक आन्तरिक समानता है। 'मनुष्य' के दो कार्यक्षेत्र है :

1. पार्थिव
2. आत्मिक

जिसमें परिवर्तन दोनों क्षेत्रों में होता है। आधुनिक समय में यूरोप ही पार्थिव क्रियाओं की रंगभूमि है, परन्तु प्राचीन काल से समस्त संसार में आत्मिक उन्नति का आधार केन्द्र भारत वर्ष ही रहा है।[3]

स्वामी विवेकानन्द चाहते थे कि 'वेदान्त के आधार पर भारत को चिन्तन के क्षेत्र में एक बार फिर अतीत का गौरव प्राप्त हो जाए, लेकिन उनकी दृष्टि इतनी व्यापक थी कि वे मात्र केवल राष्ट्रीय गौरव की सीमाओं से प्रतिबंधित नहीं थे। उनकी भावना में अन्तर्राष्ट्रीयता विद्यमान थी। वेदान्त को ठोस एवं वैज्ञानिक और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत करने के मूल में वे दोनों ही उद्देश्यों से प्रेरित थे–भारत को उपर उठाया जाए और विष्व में उसका लुप्त गौरव पुनः प्रतिष्ठित किया जाए तथा मानव जाति को कष्टों और संघर्षों से शांति देने वाला दर्शन विकसित किया जाए उसे पूर्वप्रेक्षा अधिक समृद्ध बना सके।[4] विवेकानन्द ने धर्म की उदार व्याख्या की है। राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म के प्रयोग को अनुचित बताया। धर्म राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने का साधन नहीं है बल्कि स्वयं में साध्य है, धर्म का वास्तविक उद्देश्य मानव कल्याण है। दीन–दुखियों के कष्टों के निराकरण के लिए समर्पण को धर्म की साधना का अनिवार्य अंग स्वीकार किया है। धर्म के समन्वयवादी स्वरूप तथा धार्मिक सहिष्णुता पर बल देते हैं जिसमें व्यक्ति अपने धर्म की मूल मान्यताओं के प्रति निष्ठा व श्रद्धा रखे तथा अन्य धर्मो के प्रति सम्मान का भाव सृजित करे। यही मूलतः हिन्दू धर्म की व्याख्या है, जिसे विवेकानन्द ने सैद्धान्तिक व वैचारिक आधार प्रदान किया लेकिन हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों व रूढ़ियों पर प्रहार किया और वे सन्यासी से समाज सुधारक दिखाई देने लगते हैं। उन्होंने आर्य सिद्धांत का खण्डन किया तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का समर्थन किया। विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को, भारतीय जनमानस में आत्मविश्वास एवं राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने हेतु आधार बनाया।

विवेकानन्द विवेकानन्द जी स्वतंत्र दिमाग एवं विचार की बात स्वीकार करते हैं। जहाँ जो कुछ अच्छा मिले, सीखना चाहिए, यदि ऐसा नहीं होता है तो व्यक्ति के स्वभाव में जड़ता आ जाएगी, उन्होंने कहा कि संसार सिद्धांतों की कुछ परवाह नहीं करता, वह मनुष्य को मानता है, जो उन्हें प्रिय होगा उसके वचन वे पूर्ण शांति से सुनेंगे, चाहें वे कैसे ही निरर्थक हो, लेकिन जो मनुष्य उन्हें अप्रिय होगा उसके वचन नही सुनेंगे। स्वामी जी द्वारा कहे गये ये प्रसंग वर्तमान भारतीय परिदृश्य से पूर्ण सत्यता के रूप में दृष्टव्य होते हैं। जब भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारतीय जनमानस से किसी भी प्रसंग पर वार्तालाप करते हैं तो उनके द्वारा कही गयी बातों को जनता केवल सुनती ही नहीं बल्कि उसका अनुसरण भी करती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुभव भी व्यवहारिक हैं वे सत्य के पुजारी हैं, किसी भी स्थिति में सत्य से विमुख नहीं होते थे। केवल सत्य ही चिरस्थायी बाकी सब नश्वर है। 1 फरवरी 1985 को न्यूयार्क से उन्होंने कुमारी हेल को लिखा था– ''सौन्दर्य और यौवन का नाश होता है, जीवन और धन का नाश होता है, नाम और यश का नाश होता है, पर्वत भी चूर–चूर होकर मिट्टी हो जाते है, मित्रता व प्रेम भी नश्वर है। एकमात्र सत्य ही चिरस्थायी है।'' उन्होंने कहा– सतर्क रहो, जो कुछ असत्य है उसे पास न फटकने दो, सत्य पर डटे रहो, बस तभी हम सफल होंगे– शायद थोड़ा अधिक समय लगे, पर सफल हम अवश्य होगें।''[5] जीवन की सार्थकता को प्रदर्शित करने के लिए वाक्यांश या तथ्यगत अनुभव ही स्वयं में व्यक्ति के लिए पथ प्रदर्शक होता है, इसी पर चलकर व्यक्ति स्वयं को स्थापित करता है।

स्वामी जी ने 'कर्मयोग' की शिक्षा दी है तथा कहा कि मातृभूमि की निःस्वार्थ सेवा ही सच्चा कर्मयोग है। मानव जीवन की अनेक दुश्वारियों को समाप्त करने के लिए उन्होंने गरीबी व दरिद्रता को दूर करने के लिए रास्ता दिखाया है।

- गरीबी सम्पूर्ण मानवता के लिए अभिशाप हैं।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अंधाधुंध विकास के कारण बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है।
- समाज में सर्वत्र भय, संशय प्रतिस्पर्धा व असंतोष का वातावरण निर्मित हो रहा है।
- उपनिवेशवादी व्यवस्था के द्वारा भारत का शोषण किया गया है। जिससे दरिद्रता बढ़ी है।

उपरोक्त बिन्दुओं को दूर करने के लिए स्वामीजी कर्मयोग की शिक्षा प्रदान की है। स्वामी जी का ऐसा मानना है कि किसी भी कठिन परिस्थिति में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में 'कर्म' की वह मूल कारण है जिसकी पूर्ति करके व्यक्ति अपने विकास के चरमबिन्दु को प्राप्त कर सकता है। वर्तमान में स्वामी विवेकानन्द के यह विचार पूर्णतः प्रासंगिक है। जीवन में अध्यात्मिकता का संदेश भी कर्म के फल पर अधिरोपित है।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों में समाजवाद तथा समाजवादी सोच दिखाई पड़ती है, ऐसा उन्होंने स्वीकार भी किया है तथा उनकी दृष्टि में समानता का सिद्धांत (Principle of Equality) समाजवाद का मूलमंत्र है।

समाज सुधार

1. स्वतंत्रता व गरिमा के प्रति आस्था रखते हुए भी समुदाय के हितों के लिए मनुष्य के समर्पण की आकांक्षा अभिक्त की है।
2. मानवीय कार्यो के अंतिम लक्ष्य और परिणाम समष्टिगत होने चाहिए, न कि व्यक्तिगत सुख।
3. विवेकानन्द ने मनुष्यों की समानता पर बल दिया तथा दरिद्रो की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।
4. दलितों एवं पीड़ितों के उत्थान की आवश्यकता पर बल दिया।
5. सामाजिक व्यवस्था में जातिगत वर्णो के वर्चस्व का विरोध किया।
6. पुरातन अधिकारवाद एवं पाखण्डवाद का खण्डन।
7. समाज के सावयवी स्वरूप को स्वीकार किया।
8. भारतीय समाज की बुराईयों तथा पतनोमुखी कारणों पर प्रहार किया।
9. मानवतावादी दृष्टिकोण से मनुष्यों को मूलतः पवित्र एवं दैविक माना है।

10. क्रांतिकारी परिवर्तनों की अपेक्षा धीमे सुधार का समर्थन किया।
11. बढ़ते हुए यूरोपीयकरण का विरोध किया।

धर्म में विद्यमान कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, 'धर्म के रसोई घर तक आकर सिमट गया है', जो अत्यधिक नकारात्मक है। इस नकारात्मकता को दूर करने के लिए आम लोगों को शिक्षा प्राप्त करनी होगी, तभी राष्ट्रवाद का विचार प्रभावी हो पाएगा। विवेकानन्द की शिक्षा प्रणाली को व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक की भूमिका में देखते हैं तथा भारतीय दोषों को दूर करने का साधन मानते हैं, सकारात्मक शिक्षा, सकारात्मक धर्म, सकारात्मक ज्ञान–विज्ञान को स्वीकारते हैं। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा देश के विकास का सृजन करता है। इसलिए विनम्रता, विश्वास, पवित्रता तथा आदर का भाव मनुष्यों के अन्दर जागृत हो सके ऐसा उद्देश्य ही राष्ट्रवादी मान्यता में दिखाई देना चाहिए। उन्होंने निःशुल्क शिक्षा को स्वीकार किया तथा कृषि व शिल्प की शिक्षण विधा देने की बात कही है। जो महात्मा गाँधी के दस्तकारी शिक्षा (बुनियादी शिक्षा) का कार्यक्रम है तथा इसके अलावा श्रेष्ठ समाज के निर्माण हेतु नारी की स्वतंत्र व महत्वपूर्ण भूमिका के महत्व को आवश्यक माना है।

स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से समाज के नव विकास के लिए गति देने का कार्य किया है। रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य :

1. हिन्दूधर्म में हिन्दूओं की फिर से आस्था जागृत करना।
2. अपनी संस्कृति की प्राचीनता व इतिहास की महानता का ज्ञान कराना।
3. सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् पर आधारित मानव सेवा।
4. शिक्षा, स्वास्थ्य गरीबो की सहायता।
5. राष्ट्रभक्ति, आत्मविश्वास की चेतना, युवाशक्ति पर विश्वास, युवाओं में आत्मविश्वास की भावना जागृत करना।[6]

स्वामी विवेकानन्द के विचार बदलते परिदृश्य में अत्यधिक प्रासंगिक हैं चाहे भारत हो या सम्पूर्ण विश्व के लिए उन्होंने जो ज्ञानवान प्रकाश का दर्शन कराया है वह ग्राह्य है। वर्तमान पीढ़ी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है तथा जीवनशैली, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शो में बदलाव आ रहा है।

आज की युवा पीढ़ी विकास एवं आर्थिक उन्नयन के बोझ से इतनी अधिक दब गई है कि वह अपने पारम्परिक आधारभूत उच्च आदर्शो से समझौता तक करने में हिचक नहीं रही है परिणामतः सर्वत्र असंतोष, प्रेरणा का अभाव एवं बिना प्रयत्न किये ही बेईमानी से समृद्धशाली बनने की प्रवृत्ति पनप रही है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार और बुजुर्गो की आयु एवं उनकी राय के प्रति अनादर एक आमबात हो गई है। संक्षेप में, भ्रष्टाचार एवं अनाचार बढ़ता ही जा रहा है। आम जनता प्रकाश में आने वाले नित नए घोटालों एवं अपराधों से अचंभित एवं अक्रांत है। राजनीतिक दलों में भ्रष्टाचार अपनी जड़े जमा चुका है। साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद समाप्त होने के बजाएं अपना सिर उठा रहे है; आदर्शो की परवाह बगैर लोग अनैतिक तरीकों से स्वहित सम्पादन में लगे हुए हैं। ऐसे समय में समाज को पतन से बचाने के लिए स्वामी विवेकानन्द के ओजस्वी प्रेरक विचारों की महती आवश्यकता है।[7]

बदलते परिदृश्य में पश्चिम के अंधानुकरण से भारतीय जनमानस अपना उद्धार नहीं कर सकते, धर्म और आध्यात्मिकता भारतीय राष्ट्रीय जीवन का आधार स्तम्भ है। अतः इन्ही के आधार पर भारतीयों को 'सामाजिक पुनर्निमाण' करना चाहिए। राष्ट्रसेवा को आध्यात्मिक आधार प्रदान करने के लिए विवेकानन्द ने 'भारत माता' की संकल्पना माँ भगवती के रूप में की है। उन्होंने कहा कि 'गर्व से कहो कि मैं भारतीय हूँ' सारे भारतीय मेरे बंधु है चाहें उनमें कोई दरिद्र और पतित हो, चाहें कोई सम्पन्न और माननीय हो हर कोई मेरा बंधु है। भारत की मिट्टी मेरे लिए परम् स्वर्ग है। भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है।''

निष्कर्ष

इस तरह उन्होंने सच्चे मानववाद तथा विश्वबन्धुत्व के आदर्शो का बढ़ावा दिया। वर्तमान भारतीय समाज में युवाओं के आदर्श के रूप में स्वामी विवेकानन्द का नाम आता है उनके विचार वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के

अनुरूप थे। आज भारत व विश्व में स्वामी विवेकानन्द के विचार अधिक प्रासंगिक है। जहाँ एक ओर धर्म, राजनीति पर हावी हो गया है वहीं समानता के विचारो का लोप हो रहा, एक वर्ग शक्तिशाली तथा दूसरा विपन्न हो रहा है। यह प्रक्रिया राष्ट्रों के मध्य भी चल रही है, इसलिए अब वह दौर आ गया है–जब स्वामी विवेकानन्द के विचार राष्ट्रीयकर्ता तथा अन्तर्राष्ट्रीयकर्ता एवं संगठनों के द्वारा स्वीकार किए जाए। व्यवहारिक रूप से उनके प्रेरणा संदेशों को अपनी कार्यवाही में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्रीय समाज तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन स्वीकार करें, वस्तुतः कहा जाए तो स्वामी विवेकानन्द के विचार ऐसे 'प्रेरणापुंज' के रूप में है जो इसके प्रभाव में आकर इनके विचारों को आत्मसात् करेगा उसके जीवन में अक्षय ऊर्जा के साथ प्रकाशित होगा, जिससे व्यक्ति को मोक्ष एवं विश्व में शांति तथा एकता स्थापित होगी। अतएव कहा जा सकता है कि समकालीन युग में स्वामी विवेकानन्द के आदर्श, जीवन चरित्र, कर्तव्यबोधता, धर्म के वास्तविक स्वरूप, राष्ट्रवाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद, विश्वबंधुता इत्यादि विचार मानव समाज के कल्याण के मूल साधन एवं साध्य दोनों है। जिससे मनुष्यों का कल्याण हो, यही मानवतावादी दृष्टिकोण तथा मानवतावादी चिंतन सर्वदेशीय तथा सर्वव्यापक गुण है।

संदर्भ सूची

1. *गाबा,ओ0पी0, (2009), ''राजनीति चिंतक की रूपरेखा,'' मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, पृ0सं0–294।*
2. *वहीं पृ0सं0–295।*
3. *विवेकानन्द, स्वामी, अनुवादक रामविलास शर्मा, (2000), ''भक्ति और वेदान्त'' सरस्वती पुस्तक भण्डार, लखनऊ पृ0सं0–6।*
4. *अवस्थी, अमरेश्वर व अवस्थी, रामकुमार, (1997), ''आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन,'' रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–76।*
5. *वहीं पृष्ठ –86।*
6. *संजीत, (2018),''स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता'' काब इण्टरनेशनल जनरल ऑफ इकोनॉमिक्स कॉमर्स एण्ड बिजनेस मैनेजमेन्ट JAN-MAR (2018) VOL-5/ISS-1/ A7 ISSN:2348-4969 UGCNO-47663 पृ0सं0–25।*
7. *महेन्द्र, साहनु राम व अन्य, (2018), ''राष्ट्र विकास और सामाजिक चिन्तन'' 'शोधधारा'–2018, जून, VOL-2 ISSN: 0975-3664 U.G.C.No.-41386 पृ0 सं0–3।*

****